B.A Part-3 Paper-7 Gr. A (Clinical Psychology) study material Topic- DSM by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Psychology deptt. Vaishali Mahila College, Hajipur) 28.05.20

DSM (Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders)

DSM नैदानिक समस्याओं को वर्गीकृत करने का एक अति महत्वपूर्ण तंत्र है। नैदानिक समस्याओं को वर्गीकृत करने के लिए APA द्वारा इस तंत्र को विकसित किया गया है।

- इसका प्रथम संस्करण 1952 में प्रकाशित किया गया। इसमें कुल clinical disorders की 60 श्रेणियां (categories) थी जिनका इनमें वर्णन किया गया था।
- 1968 में DSM-I का दूसरा संस्करण प्रकाशित किया गया जिसमें नैदानिक विकृतियों के श्रेणियों को 60 से बढ़ाकर 145 कर दिया गया। DSM-II बहुत हद तक DSM-I के ही समान था

क्योंकि इसमें भी नैदानिक श्रेणियों का वर्णन psychoanalytic theory द्वारा काफी प्रभावित थे तथा Psychiatric words का उपयोग काफी किया गया था।

- 1974 में DSM के तीसरा संस्करण को प्रकाशित करने का कवायद प्रारंभ हो गया और 1980 में DSM-III का प्रकाशन हुआ। DSM-III में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए जिसमें दो अतिमहत्वपूर्ण थे। पहला तो यह कि DSM-III में प्रत्येक नैदानिक समस्या की पहचान करने के लिए बाह्य एवं सुस्पष्ट नैदानिक कसौटी जिसमें कसौटी के बारे में विशिष्ट नियम उपलब्ध थे, बनाए गए तथा दूसरा परिवर्तन बहुध्रुवीय तंत्र (multiaxial system) की शुरुआत करना जिसमें किसी व्यक्ति को 5 ध्रुवों (axes) पर वर्णन किया जाता था। DSM-III के प्रकाशित होने का परिणाम यह हुआ कि नैदानिक

विकृतियों में शोध की गुणवत्ता तथा मात्रा दोनों में पर्याप्त वृद्धि हुई। फिर कुछ त्रुटियों के कारण इसका संशोधित प्रारूप 1987 में प्रकाशित किया गया जिसे DSM-III R (revised) कहा गया जिसमें DSM-III के धनात्मक पहलुओं को बरकरार रखा गया तथा उसके कुछ समस्याओं जैसे पदानुक्रमिक संगठन को हटा दिया गया।

- 1994 में DSM-III R को पुनः संशोधित कर DSM-IV का प्रकाशन किया गया। DSM-IV में 300 से ज्यादा नैदानिक श्रेणियों को सम्मिलित किया गया तथा किसी श्रेणी विशेष में व्यक्ति के होने या न होने के लिए कुछ निर्णयात्मक नियम (decision rules) भी बनाए गए तथा इस संस्करण में बहुध्रुवीय तंत्र (multiaxial system) के प्रावधान को बरकरार रखा गया।

- 2000 में APA द्वारा DSM-IV का text revision जिसे DSM-IV-TR कहा गया, प्रकाशित हुआ। इसमें कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं किया गया और न तो कोई नई विकृति को और न ही कोई उसके उप प्रकार (sub type) को जोड़ा गया है। सिर्फ परिवर्तन इतना ही किया गया है कि कुछ विकृतियों के वर्णन करने के लिए जो पाठ्य (text) थे, उसे अधिक सुस्पष्ट एवं वस्तुनिष्ठ कर दिया गया। इसके पीछे तर्क यह था कि DSM-IV को न केवल एक नैदानिक मैनुअल (Diagnostic Manual) बल्कि एक शैक्षिक उपकरण (educational tool) के रूप में भी उपयोग किया जाता है। DSM-IV का यद्यपि प्रकाशन 1994 में हुआ था परंतु इसमें 1992 तक के ही शोध परिणामों को सम्मिलित किया गया था।

- APA द्वारा 2013 में इसका latest edition DSM -V प्रकाशित किया गया है।

इस तरह हमने देखा की नैदानिक समस्याओं को वर्गीकृत करने का यह एक अति महत्वपूर्ण तंत्र है जिसमें समय के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए हैं।

जहां तक मानसिक विकृतियों के वर्गीकरण का प्रश्न है, इस सिलसिले में दो प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्गीकरण तंत्र उपलब्ध है। 1948 में WHO ने International Classification of Diseases-6 or ICD-6 का प्रकाशन किया जिसमें मानसिक रोगों का एक औपचारिक वर्गीकरण का प्रकाशन किया गया। इसके तुरंत बाद APA (American Psychiatric Association) ने तुलनात्मक रूप से अधिक प्रभावकारी वर्गीकरण तंत्र का प्रकाशन किया जिसे Diagnostic and statistical Manual of Mental disorders or DSM) कहा गया। DSM के कई

संशोधित प्रारूप का प्रकाशन होता रहा है। DSM-IV की लोकप्रियता तुलनात्मक रूप से पूरे विश्व में सर्वाधिक है। इसमें कुल 5 आयाम (axis) है जिनका वर्णन इस प्रकार है-

1. **आयाम-I: नैदानिक संलक्षण (Axis: I Clinical Syndrome)-** इस आयाम में व्यक्तित्व विकृतियों तथा मानसिक मंदता को छोड़कर 16 मानसिक रोगों को रखा गया है। इन 16 में anxiety disorder, dissociative disorder, somatoform disorder, schizophrenia, mood disorder, sexual and gender identity disorder, sleep disorder, adjustment disorder, substance related disorder प्रमुख हैं।

2. **आयाम II : व्यक्तित्व विकृतियां एवं मानसिक मंदता (Axis II : Personality disorders and Mental retardation)-** इस श्रेणी में उन विकृतियों को रखा गया है

जो बाल्यावस्था या किशोरावस्था में सामान्यतः प्रारंभ होकर होते हैं और व्यस्कावस्था में स्थाई रूप ले लेते हैं। इसमें व्यक्तित्व विकृति के 10 प्रकारों एवं मानसिक मंदता को रखा गया है।

3. **आयाम III : सामान्य चिकित्सीय अवस्था (Axis III: General Medical Condition)-** इस आयामों में उन सभी चिकित्सीय समस्याओं को रखा गया है जो मनोवैज्ञानिक रोग उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

4. **आयाम IV: मनोसामाजिक एवं पर्यावरणीय समस्याएं (Axis IV: Psychological and Environmental Problems)-** इस आयाम के तहत उन कारकों पर विचार किया जाता है जो गत कुछ वर्षों से व्यक्ति के लिए समस्या का स्रोत रहा है या भविष्य

में होने वाली प्रत्याशित समस्याएं जैसे- सेवानिवृत्ति, जिनसे व्यक्ति की वर्तमान समस्याएं बढ़ जाती हैं, पर विचार किया जाता है। अतः यह आयाम वैसे मनो सामाजिक एवं पर्यावरणी stressors जो मानसिक विकृति के निदान एवं उपचार को प्रभावित कर सकते हैं, को अभिलिखित करने का एक चेक लिस्ट है।

5. **आयाम V: कार्यों का संपूर्ण मूल्यांकन (Axis V: Global Assessment of functioning)-** इस आयाम के तहत व्यक्ति के समायोजी कार्यों के स्तर का मापन होता है। इस तरह के मूल्यांकन में तीन कारकों पर अधिक बल डाला जाता है- परिवार एवं दोस्तों के साथ सामाजिक संबंध, पेशेवर कार्यवाही, तथा खाली समय का उपयोग। इस आयाम के तहत इन तीनों क्षेत्रों का मापन एक 100 बिंदु

मापनी पर होता है जिसमें 1 बहुत निम्न तथा 100 बहुत उसका संकेत करता है।

स्पष्ट हुआ कि DSM-IV में प्रथम दो आयामों के माध्यम से मानसिक रोगों का वर्गीकरण किया गया है तथा अंतिम तीनों आयामों द्वारा व्यक्ति के बारे में उसके वास्तविक लक्ष्यों से आगे जाकर उसके बारे में एक सार्वभौम या व्यापक तस्वीर प्राप्त करने की कोशिश की जाती है।